Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

ॐ

|| Whole World is a Family ||

28|4|2014
"बाबा धाम"

❀ पवित्र माध्यम ❀

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - -
जिस प्रकार हम देखते है, की विद्वान हम न भी हो तो भी अन्य लेखको की पुस्तके पढ़कर हम विद्वान है, यह नाटक किया जा सकता है, हम अमीर न हो तो भी दुसरो के वस्त्र और दुसरे की गाडी आदी लेकर अमीरी का भी नाटक किया जा सकता है, हम सुंन्दर न भी तो प्रसाधनो का उपयोग करके सुंदरता का भी नाटक कीया जा सकता है, इस जगत मे केवल "सत्य" ही एकमात्र है, जिसका नाटक नही किया जा सकता है, क्योकी "सत्य" केवल "सत्य" है, और इस जिवन मे "सत्य" एक ही है, उस "सत्य" को छोडकर सभी असत्य है, और जब वह सत्य भितर प्रगट होता है, तो उस सत्य का चैतन्य उस "माध्यम" के

आसपास भी महसुस होता है। और जिस "माध्यम" मे प्रगर होता है, उस "माध्यम" का समाज मे रहना और कार्य करना अत्यन्त कठीण होता है, "माध्यम" की "शुद्धता" और "पवीत्रता" ही उसके जिवन की समस्या बन जाती है, "अती संवेदनशीलता के कारण ही तुम्हारे माध्यमसे "विश्वभर" मे कार्य होगा। लेकीन यही अती संवेदनशीलता तुम्हारे "स्वयम" के लीये "घातक" सिद्ध होगी यह मेरे गुरुदेव के शब्द आज मुझे याद आ रहे है,"

आज इस अतीसंवेदनशीलता के कारण जो "शरीर" की तकलीफे मुझे "भोगना" पड रही है, एक सरल सहज स्वभाव के कारण सभी पर विश्वास करना, सभी सच बोल रहे है, यही मानना, सभी के सामने अपने "हृदय" मे जो भी लगा वह सब दिल खोल कर के बताना प्रत्येक का दुख: स्वयम अनुभव करना, प्रत्येक मनुष्यमात्र के लीये सदैव "मंगल" की कामना ही करना सब का भला करना।

इतना शुद्ध और पवीत्र भाव के साथ इस समाज मे रहना कठीण हो रहा है, और जो दिक्कते मुझे आ रही है, वह किसी को भी "जीवन" मे न झेलना पडे,

यही सब अनुभव से कीसी भी साधक को भवीष्य का "माध्यम" नही बनाया है, भवीष्य मे निरन्तर कार्य होता रहे इस लीये माध्यम बनाया है, "मंगलमुर्तीयो" अब भवीष्य मे उन के "माध्यम" से ही आगे का कार्य होगा, वे इन सब समाज की तकलीफो से "मुक्त" रहेगी लेकीन उन "मंगलमुर्तीयो" के आसपास अच्छा पवीत्र और शुद्ध वातावरण रखने की आवश्यकता होगी क्योकी इन मंगलमुर्तीयो का कार्यकाल ८०० साल तक होगा। क्योकी इसी "संकल्प" से ही इनकी "प्राणप्रतीष्ठा" की गयी है, क्योकी भवीष्य मे समाज मे रह कर कार्य करने के लिये वही एक माज "माध्यम" है

उपयुक्त हो सकती है, इस जगत को हिमालय मे रहने वाले गुरु क्यो "कोयले की खदान" कहते है, उस बात का अर्थ वहाँ उनके सानीध्य मे कभी नही जाना लेकीन इस समाज मे आकर जाना की वह सही कहते है। क्योकी समाज का कोई भी "जीव" समाज के बुरे प्रभाव से "मुक्त" नही है। फिर भले ही वह "आध्यात्मीक जीव" ही क्यो न हो। "आध्यात्मीक जीव" के "मार्गदर्शक" ही शरीर भाव से "मुक्त" नही है। तो समाज का तो शरीरभाव से "मुक्त" होना संभव ही नही है, ऐसे समाज मे "माध्यम" को शरीर मे रहना कठीन हो रहा है, और इसी लीये "माध्यम" शरीर को छोड कर बार² हिमालय की यात्रा पर जाते रहता है, क्योकी अब शरीर से तो हिमालय जाना संभव नही है, क्योकी लाखो साधको की "इच्छा शक्ती" वहा जाने नही देती और "माध्यम" को इस शरीर मे रहा नही जाता। अब ऐसी स्थिती मे स्वाभावीक

हो है, की "शरीर की गतीविधीया" क्रमश कम कम होती जायेगी। क्योकी गतीविधीया करने के लिये "माध्यम" का शरीर मे रहना आवश्यक होता है। माध्यम का शरीर छोड कर "हिमालय की यात्रा" पर जाना केवल गहन ध्यान अनुष्ठान मे ही संभव होता था लेकीन इस "आठवे गहन ध्यान अनुष्ठान" के बाद ये बदलाव आया है, की माध्यम कई बार शरीर छोडकर हिमालय की यात्रा पर चला जाता है, वहाँ उसका अपना एक "स्थायी ठिकाना" है, आज कल वही उसे "रीकाल्ल" मील पा रहा है, शायद अब माध्यम के शरीर का कार्य समाप्त हो गया हो, यह सब धिरे² होने वाले बदलाव है, जो माध्यम महसुस कर रहा है, अब तो भवीष्य मे माध्यम के शरीर के "दर्शन" भी "दुर्लभ" हो जायेगे क्योकी अब शरीर की उपयोगीता तो सामुहीक कार्यक्रमो तक ही सीमट कर रह गयी है, यह "सत्य" स्थीती है, अब यह देखना है, यह स्थिती कब तक चलती है।

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

अब तो प्रत्येक सामुहिकता मे होने वाले कार्यक्रम महत्वपुर्ण है, क्योकी वह कार्यक्रम ही "माध्यम" के शरीर के सानीध्य की "यादगार" सिद्ध होगे "माध्यम" को तो अपने गुरुओ का सानीध्य कम समय ही मिल पाया है, लेकीन जितना भी मीला उससे ही अपने जिवन को माध्यम ने एक नयी दिशा दी, और उस दिशा मे रहकर कार्य किया, "माध्यम" को सदैव प्रश्न रहता है, एक "अनुभुती" से ही मेरा सारा जिवन बदल गया वैसा मेरे साधको का क्यो नही बदलता? यही प्रश्न आप भी अपने आप को करे और उत्तर मीले तो मुझे भी बताना, आपके उत्तर की प्रतीक्षा मैं कर रहा हु। आप सभी को खुब खुब आशिर्वाद

आपका
बापा स्वामी
28/4/2014